योगिता यादव की कहानियों में अभिव्यक्त जीवन मूल्य : एक अनुशीलन

शोधार्थी: सरिता
जयोति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (हिंदी विभाग)

निर्देशिका : डॉ चित्रा

सार:

योगिता यादव की कथायात्रा नारी जीवन की तकलीफों को सबके सामने रखती है। क्योंकि योगिता यादव की संवेदनशीलता का स्वरुप स्थिर नहीं है, बल्कि यह सदैव औरतों की स्थिति पर हो रहे बदलाव के बारे में लिखती है। योगिता यादव की कहानियों में आधुनिकता का नया मूल्य परम्परा के विगत मूल्यों की बलि देकर प्रवेश करता है। समग्रतः विचार करने पर यह स्पष्ट होगा की योगिता यादव आधुनिक हिंदी कथा साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर है। उन्होंने हिंदी कथा साहित्य के संवेदनापक्ष और शिल्प पक्ष को नूतन प्रयोग से नितांत गौरवशाली बनाने का प्रयास किया है।

1. परिचय :

यादव पत्र–पत्रिकाओं में लगातार छपती रहती हैं, जिनमें हंस, नया ज्ञानोदय, प्रगतिशील वसुधा, पर्वत राग, पुनर्नवा आदि साहित्यिक पत्रिकाएं भी शामिल हैं। इसके अलावा सोशल मीडिया पर भी लगातार सक्रिय रहती हैं। आपकी चर्चित प्रकाशित पुस्तकों में 'आस्था की अर्थव्यवस्था मंदिरों के शहर जम्मू में', 'ख्वाहिशों के खांडववन' और 'गलत पते की चिट्ठियां' शामिल है। आपने कुछ पुस्तकों का संयुक्त रूप से संचयन और संपादन भी किया है। आप लेखन और सृजन कर्म के लिए भारतीय ज्ञान पीठ के नव लेखन पुरस्कार, हंस कथा सम्मान और कलमकार पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। स्कूल में भी भाषा पर अधिकार और साहित्यिक अभिरुचि के चलते शिक्षकों की खूब सराहना मिली और कई प्रतियोगिताएं भी जीतीं। पठन पाठन के प्रति रुचि सिर्फ साहित्यिक पुस्तकों तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उन्हें विविध विषयों को पढ़ने का शौक रहा है। जिनमें सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर केंद्रित पुस्तकें भी शामिल रहीं। यही वजह थी कि जब कॉलेज में दाखिले की बारी आई तो उन्होंने राजनीतिक शास्त्र विषय चुना और इसमें ऑनर्स किया (बीए ऑनर्स राजनीति शास्त्र)। यहां भी शिक्षकों का स्नेह और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अंतर्राष्ट्रीय संबंध पढाने वाले अपने प्राध्यापक डॉ सुशील दत्तक की सलाह पर उन्होंने पत्रकारिता में भविष्य बनाने का मन बनाया और इसके लिए दिल्ली के क्नॉट प्लेस स्थित वाईएमसीए (Young Man Christian Association) पत्रकारिता संस्थान में दाखिला लिया और ए ग्रेड के साथ पढ़ाई पूरी। पढ़ाई के साथ ही नवभारत टाइम्स और दैनिक हिंदुस्तान जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्रों के लिए लिखने का भी मौका मिलने लगा । जिसका परिणाम यह हुआ कि पत्रकारिता की पढाई पूरी होते ही देश के प्रमुख समाचार पत्रों में से एक दैनिक भास्कर के साथ काम करने का अवसर मिला। यहां से एक पत्रकार के रूप में उनके जीवन में नए अनुभव शामिल होने लगे। यह अक्टूबर 2003 का समय था जब राष्ट्रीय समाचार पत्र अमर उजाला की जम्मू यूनिट में काम करने का प्रस्ताव उन्हें मिला। जम्मू को अभी तक अहिंदी भाषी क्षेत्र माना जाता है पर यहां की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की सक्रियता उल्लेखनीय है। इन लोगों के बीच जब उन्होंने काम किया तो जैसे साहित्य के प्रति रुझान फिर से बढने लगा। वर्ष 2004 में जब जम्मू से मुजफ्फराबाद के लिए कारवां–ए–अमन बस की शुरुआत हुई तब उन्होंने बंटवारे और कबायली हमले में मीरपुर, कोटली और मुजफ्फराबाद से उजड़ कर आए लोगों के दुख दर्द को समेटते हुए सिलसिलेवार कई स्टोरीज कीं। पर यह अनुभव इतना प्रगाढ़ और गहरा था कि संवेदनाएं पूरी तरह अखबारी कॉलम में सिमट नहीं पायी। और तब योगिता यादव ने किसी मंच पर अपनी पहली साहित्यिक रचना प्रस्तुत की। 'इन दिनों' शीर्षक से यह कविता जम्मू–कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के मंच पर पढ़ी गई, जिसे लोगों ने खूब सराहा। 'लगातार कुछ वर्ष कविताएं लिखने के बाद लेखनी ने कहानियों का रुख किया।

2. योगिता यादव के जीवन मूल्य

योगिता यादव के जीवन व्यस्क दृष्टिकोण समझने के लिए सबसे पहले सामाजिक संस्था के विषय में उसके दृष्टिकोण को जानना आवश्यक है। रचनाओं के अंतर्गत दो रूपों में योगिता यादव का सामाजिक दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है। उनकी कहानियां एक और परिवार के बदलते स्वरूप प्रस्तुत करती और दूसरी और स्त्री–पुरुष संबंधों पर प्रकाश डालती हैं। [1]

व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आकलन उसके जीवन–मूल्यों से किया जाता है। जीवन–मूल्य सफलता के लिए जरूरी हैं। वैदिक काल से होते हुए, गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी तक अनेक महापुरुष जीवन–मूल्यों के कारण इतिहास में अमर हो गए। जीवन मूल्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाते हैं। याद रखें, जो व्यक्ति मूल्यहीन जीवन जीते हैं वे समाज में व्यर्थ माने जाते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए बोझ माने जाते हैं। निठल्ले व्यक्ति समाज का कभी भी मार्ग–दर्शन नहीं करते। मूल्यहीन व्यक्ति की जिंदगी पंगु मानी जाती है, जिसमें कोई गति और निरंतरता नहीं होती और सिद्धांतों के अभाव में ऐसे लोग महत्वहीन, अनुपयोगी और परिवार के लिए बोझ स्वरूप होते हैं। सिद्धांत और मूल्य जीवन को ऊर्जा देते हैं। समाज हो चाहे परिवार, सबका संचालन कुछ आदर्शों और सिद्धांतों से होता है। यदि जीवन में इनका अभाव हो जाए तो समाज का ढांचा गड़बड़ाने लगता है। नियम जीवन को अनुशासित करते हैं। ये जीवन के आधारभूत तत्व हैं।

अनियमित व्यक्ति जीवन के किसी क्षेत्र में सफल नहीं माना जाता। जीवन अनेक सत्यों, आदशरें और नियमों के द्वारा संचालित होता है। इन्हीं के द्वारा जीवन–मूल्य स्थापित होते हैं। संसार के सभी महापुरुष या सफलतम व्यक्ति अपने ऊंचे आदशरें और मान्यताओं के कारण ही समाज में गाथा बनकर अपना नाम रोशन करते हैं। समाज सर्वदा ऐसे लोगों का अनुकरण करता है। रीढ़विहीन या लिजलिजे व्यक्ति का समाज में कभी आदर नहीं होता। ऐसे लोग सदैव आलोचना और निंदा के पात्र होते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कुछ मूल्य निर्धारित करने पड़ते हैं। [2]

कल्याण और सफलता को पाना है तो हमें मूल्य आधारित जीवन का मार्ग चुनना पड़ेगा। इसके अभाव में जीवन की सार्थकता सदा संदिग्ध बनी रहेगी। हम समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बनें, यही हमारी सार्थकता है। इसके लिए हमें मूल्य आधारित जीवन जीने के मार्ग का चयन करना पड़ेगा। निःसंदेह मूल्यों का निर्धारण करने में हमारे लिए प्रारंभ में कठिनाइयां आएंगी जिनसे हमें जूझना पड़ेगा। जीवन–मूल्य सहज ही निर्धारित नहीं होते, इसके लिए त्याग और सत्य के तत्व जरूरी हैं। हम दूर न जाकर मात्र गांधी, गोखले, तिलक, राममोहनराय आदि–आदि लोगों की तरफ दृष्टि डालें तो सहज ही पता चल जाएगा कि इन लोगों के जीवन में मूल्यों का क्या स्थान था।

जो एक व्यक्ति यानि स्वयं में लागु होता है वो तो प्रेम ही है, ये हमें तब समझ आता है जब हम स्वयं से प्रेम करने की सीख लेते हैं। ये प्रत्येक एक इकाई में लागु होता है यानि कि यदि हम एक टीम के मेंबर हैं और दूसरी तीन से लड़ना है तो टीम को हम इकाई के रूप में देखें तो इस टीम को बांधे रखने के लिए बस प्रेम ही काफी होता है।

जो एक व्यक्ति यानि स्वयं में लागु होता है वो तो प्रेम ही है, ये हमें तब समझ आता है जब हम स्वयं से प्रेम करने की सीख लेते हैं। ये प्रत्येक एक इकाई में लागु होता है यानि कि यदि हम एक टीम के मेंबर हैं और दूसरी तीन से लड़ना है तो टीम को हम इकाई के रूप में देखें तो इस टीम को बांधे रखने के लिए बस प्रेम ही काफी होता है।

जब इकाई एक से दो हो जाती है तब प्रेम काफी नहीं होता और आदर का आगमन होता है। यानि कि दो इकाईओं के बीच यदि आदर बनाये रखा जाये तो प्रेम भी अपनी धूरि में टिका रहेगा। यानो दो देशो के बीच यदि आपस में आदर बनाये रखने तो आपस में प्रेम भी भरा रहेगा।

3. कहानियों में अभिव्यक्त जीवन मूल्य

प्राचीनकाल में भारतीय समाज में नारी को सम्मानीय स्थान प्राप्त था । कालांतर में नारी को अनेक सामाजिक अवरोधों की श्रंखला में जकड़ कर उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त कर दिया गया। फलतः नारी जन्म से लेकर मृत्युपरांत समस्याओं में घिर गयी और उसका जीवन अभिशप्त समझा जाने लगा। आधुनिक कल में नई शिक्षा के साथ सामाजिक परिवर्तन प्रारम्भ हुए जिसके परिणामस्वरूप नारी विषयक दृष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ और उसे मानवी रूप में देखा गया। अनेक समाज सुधारकों ने नारी की दयनीय स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया। योगिता यादव ने अपनी लेखनी में नारी विषयक समस्याओं को उठाया और यथा संभव उनके नारीकरण की सार्थक पहल करने का यत्न किया। उनके साहित्य में विवाह के पूर्व, विवाह के बाद और विवाहेतर जीवन में नारी की समस्याओं का यथार्थ अंकन है। योगिता यादव के प्रारंभिक कहानी 'पीड़ का पेड़' का केंद्र बिंदु नारी जीवन की समस्याएं ही है। भारतीय समाज में कन्या के जन्म को किस प्रकार अभिशाप समझा जाया है, 'नेपथ्य' कहानी में योगिता यादव ने इस यथार्थ का अंकन किया है, तदुपरांत उसके पालन, पोषण तथा सुरक्षा की समस्या आती है और फिर दहेज के कारण विवाह की एक समस्या बन जाता है। वैवाहिक जीवन में नारी अनेक समस्याओं से घिरी रहती है। योगिता यादव ने विवाह विच्छेद, नारी चरित्र पर संदेह, अनमेल विवाह, नारी शोषण की समस्याओं को उठाया है। योगिता यादव समाज में स्त्री को पुरुष के समान अधिकार प्रदान रने के पक्षधर है उनका मन्ना है की जब जीवन रूपी गाड़ी के दोनों पहिये बराबर होंगे तभी वह संतुलित रूप से विकास के पथ पर अग्रसर हो सकती है।

मूल्य जहां होते हैं, वहां संस्कृति होती है और संस्कृति जहां वास करती है, वहां पर मूल्य भी जीवंत एवं जीवित होते हैं। मूल्य एवं संस्कृति जहां मिलते हैं, वहां एक संपूर्ण, सुयोग्य एवं प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व जन्म लेता है। ऐसा व्यक्तित्व जिसके अंदर मानवता की सेवा का भाव होता है तथा अपने मूल्यों की रक्षा के लिए वह स्वयं को निछावर भी कर सकता है। जो निर्जीव एवं निष्प्राण परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देता है तथा अनुचित एवं अप्रासंगिक मूल्यों के स्थान पर उचित एवं युग की मांग के अनुरूप चलने वाली चीजों को स्थापित करता है। ऐसा व्यक्तित्व प्राचीन का असम्मान करके उसकी उपेक्षा नहीं करता, बल्कि उसको समुचित सम्मान प्रदान कर वर्तमान समय में उपयोगी एवं उपादेय बनाता है। वह प्राचीनता के संग नवीनता को जोड़ता है। जहां भी श्रेष्ठ है, उसे अपनाता है तथा उसी के अनुरूप अपना जीवन ढालता एवं गढ़ता है। 5सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने वाला व्यक्तित्व अवश्य ही योग्य, कुशल, विवेकावान, विचारवान, भावनाशील एवं सद्गुणी होता है। सांसारिक प्रतियोगिता में उतनी ही रुचि के साथ भाग लेता है, जितना कि औरों की सेवा, सहायता एवं सहयोग करने में। ऐसा व्यक्तित्व विचार एवं भाव दोनों को समान रूप से विकसित करता है। विचार उसे संसार की समझ पैदा करने एवं भावुक होकर दिशाहीन होने से बचाते हैं तथा भावना उसके विचारों को पुष्ट एवं प्रवृत्त बनाती है। सद्गुणी व्यक्तित्व में दोनों बातें समान रूप से होती हैं। ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्ति जहां भी जाता है, उसे सफलता मिलती है, वह असफल नहीं होता है। वह जिस स्थान, संस्था आदि में होगा, वहां विकास का नया आयाम गढ़ेगा। ऐसे व्यक्तित्व का कैरियर बहुत ऊंचा होता है, क्योंकि प्रत्येक संस्थान एवं कंपनी अपने पास मूल्य आधारित, ईमानदार, जिम्मेदार, मेहनतकश, निष्ठावान, चरित्रवान एवं संवेदनशील व्यक्ति चाहती है। ऐसा व्यक्ति नौकरी की खोज नहीं करता, बल्कि व्यवसाय उसे तलाशता है।

संसार के सभी विद्वानों ने 'संस्कृति' शब्द की विभिन्न परिभाषाएं, व्याख्याएं की हैं। कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं मिल पाती फिर भी इतना तो स्पष्ट ही है कि 'संस्कृति' उन भूषणरूपी सम्यक् चेष्टाओं का नाम है जिनके द्वारा मानव समूह अपने आंतरिक और बाह्य जीवन को, अपनी शारीरिक मानसिक शक्तियों को संस्कारवान, विकसित और दृढ़ बनाता है। संक्षेप में संस्कृति मानव समुदाय के जीवन–यापन की वह परंपरागत किंतु निरंतर विकासोन्मुखी शैली है जिसका प्रशिक्षण पाकर मनुष्य संस्कारित, सुघड़, प्रौढ़ और विकसित बनता है।

4. निष्कर्ष

स्वतन्त्रोत्तर हिंदी पद्य साहित्य में कथा साहित्य का खास महत्व है क्योंकि इस कल में कथा साहित्य में कई नूतन परवर्तियों का श्रीगणेश हुआ था। स्वतन्त्रोत्तर कालीन बदली राजनितिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की असलियत तत्कालीन साहित्य जाहिर करता है। कस्बे के मध्यमवर्ग परिवार के सदस्य होने के नाते योगिता यादव स्वयं इन बदलाव के भोक्ता रहे है जिनका जीवंत उद्घाटन अपने कथा साहित्य में योगिता यादव ने किया है।

राजनितिक व्यवस्था के कारण देश की आर्थिक स्थिति भी खराब हो गयी।नेताओं की स्वार्थता, योजनाओं के कागजों में ही बंद होने की नीति, पूंजीवाद, शोषण आदि के कारण धनिक और अधिक धनिक एवं गरीब और अधिक गरीब होता गया। समाज एवं परिवार में व्याप्त अधिकांश समस्याओं की जड़ें आर्थिक असमानता और आर्थिक आभाव ही है। स्वतन्त्रोत्तर राजनितिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हुए भ्र्ष्टाचार, मूलयविघ्टन, आदि का सफल अंकन करने में तत्कालीन कथाकार सक्षम निकले। नई कहानी की शिल्पी होने के नाते योगिता यादव की रचनाएँ इस बदलाव को अत्यंत सहज एवं यथार्थ रूप में अंकित करने में सफल बन गयी है। योगिता यादव की ख्याति का मुख्या कारण उनकी ही कहानियाँ है। योगिता यादव की संवेदनशीलता अपनी प्रारम्भिक कहानियों में नारी की समस्याओं को रूपायित करती है।

'पीड़ का पेड़', 'अनहोनी', 'अश्वत्थामा पुनः पुनः' आदि की कहानियों में नैतिकता, त्याग, आदर्शवादिता और मानवतावाद के मूल्यों में आस्थावान चरित्र योगिता यादव का प्रमुख लक्ष्य है। इन कहानियों में लेखकीय संवेदना, भावुकतामूलक आदर्शों की स्थापना का आग्रह चाहती है।

योगिता यादव की कथायात्रा नारी जीवन की तकलीफों को सबके सामने रखती है। क्योंकि योगिता यादव की संवेदनशीलता का स्वरुप स्थिर नहीं है, बल्कि यह सदैव औरतों की स्थिति पर हो रहे बदलाव के बारे में लिखती है। योगिता यादव की कहानियों में आधुनिकता

5. संदर्भ

1. अनाहद पत्रिका, योगिता यादव, 7 अगस्त 2013 को पोस्ट किया गया
2. उर्मिला शुक्ल, पुस्तक समीक्षाः योगिता यादव का उपन्यास - ख्वाहिशों के खांडववन, 25-05-2020
3. सईद अंसारी, जीवन से जुड़ी सहज कहानियां समेटती है 'क्लीन चिट',आज तक, 09 अक्टूबर 2014
4. रविवारीय विशेषः योगिता यादव की कहानी, ताऊ कितने अच्छे हैं, 29 नवंबर, 2020
5. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाश, 15 ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहबाद, परिवर्धित सं. 1986 .
6. आधुनिकता और समकालीन रचना सन्दर्भ, डॉ. नरेंदर मोहन, दी मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया प्रा. ली., दिल्ली, प्र. सं. 1977 आज को हिंदी कहानी विचार और प्रक्रिया, मधुरेश ग्रन्थ निकेतन, रार्नाघाट, पटना, प्र. सं. 1971.
7. एक दुनिया: समानांतर, सां. राजेंदर यादव, अक्षर प्रकाशन, प्रा. लिं. 2ध्36, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली.
8. कहानीकार कमलेश्वर सन्दर्भ और प्रकृति, सूर्यनारायण मा. रणसुभे, पंचशील प्रकाशन, फिल्मकॉलोनी, जयपुर, प्रा. सं. 1982 .
9. कमलेश्वर का कथा सहित्य, माधुरी शाह, साहित्य, रलालय, 37ध्50, गिलिस, बाजार, कानपूर, पर. सं. 1982
10. कहानी - नई कहानी, नामवरसिंह, लोकभारती प्रकाशन, 15 ए महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहबाद, सं. 1989
11. कहानी के नए सीमान्त, डॉ. रतनलाल शर्मा, दीर्घा साहित्य संसथान, 25 बैग्लो रोड, दिल्ली.
12. कहानी: स्वरुप और संवेदन, राजेंदर यादव नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली .
13. लमलेश्वर के उपन्यासों में मनोविज्ञान. डॉ. रेखा शर्मा, मिलिंद प्रकाशन, कन्दस्वामी बाग, हनुमान व्यायामशाला की गली, सुल्तान बाजार, हैदराबाद.